प्रा क्क थ न

जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिंदी साहित्य के एक सफल और अद्वितीय साहित्यकार हैं। साहित्य की हर विधा में आपने अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप रखी है। आधुनिक काल में साहित्य की विविध विधाओं का विकास हुआ। इसी तरह कहानी का प्रवाह भी अबाध गति से बहता रहा। उसमें जीवन की परछाईयाँ दृष्टिगोचर होने लगीं। ` प्रेम ` मनुष्य के जीवन का अनिवार्य तत्व है। इसे आधुनिक कहानीकारों ने निरंतर प्रतिष्ठित किया। जयशंकर प्रसाद जी का इस दिशा में अतीव मौलिक योगदान रहा। मानव जीवन की कठिनाईयों के अँधेरे में आपने प्रेम रूपी दीप जलाने की जो कोशिश की है, उससे आज का ● पाठक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

एक शिक्षक तथा हिंदी साहित्य की प्रेमिका होने के नाते मुझे प्रसाद जी की ` आकाशदीप,` ` पुरस्कार,`` ममता,`` छोटा जादूगर,` और दूसरी अनेक कहानियों को पढ़ने और पढ़ाने का मौका मिला हुआ। हो सकता है तभी से मेरे मन को आपके प्रेम की त्याग-समर्पण वृत्ति तथा दिव्यता ने आकर्षित कर लिया था। आगे चलकर यही आकर्षण रुचि और ध्यास में परिवर्तित हो गया। डॉ. के.पी. शाहा जी के समर्थ निर्देशन में मेरी इस विषय में खास ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा की पूर्तता हो गयी।

प्रसाद जी मानव जीवन के सूक्ष्म पारखी हैं। मनुष्य के भावविश्व से भी आप अच्छी तरह से वाकिफ हैं। अत: आपने ` प्रेम ` को मनुष्य जीवन का सबसे प्रमुख तथा सुंदर तत्व स्वीकार किया। आपने अपनी कहानियों में प्रेम के उन रूपों को रूपायित किया है जो समय-समय पर मनुष्य के जीवन में अवतरित होते हैं। प्रेम के इन भिन्न-भिन्न रूपों को मद्दे नज़र रखते हुए प्रसाद जी की कहानियों में चित्रित प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट करने का मैंने इस शोध प्रबंध में प्रयत्न किया है। इस सिलसिले के दौरान कुछ प्रश्न सामने आ गये और

उनका जवाब ढूँढना आवश्यक हो गया। वे प्रश्न इसप्रकार हैं -

१) प्रसाद जी प्रेम के सफल चितेरे हैं। मनुष्य जीवन में प्राप्त अनेक प्रेम-रूपों को आपने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया। ऐसे हालात में आपसे निर्मित प्रेम का निश्चित स्वरूप किस प्रकार का होगा ?

२) प्रसाद जी भाव और कल्पना के लेखक हैं। भारतीय उज्वल इतिहास से आपने प्रेरणा पायी और प्रेम के भव्य-दिव्य स्वरूप का निर्वाह किया। इसके बावजूद सवाल ये खड़ा होता है कि इस प्रेम का चित्रण करने के पीछे प्रसाद जी का लक्ष्य क्या रहा होगा ?

३) प्रसाद जी ने केवल कहानी में ही नहीं वरन् अपने संपूर्ण साहित्य में प्रेम को अभिव्यंजित किया है। तो इस दृष्टि से आपकी कहानियों में कोई विशेष बात नज़र आती है ?

इन सवालों का हल ढूँढने के लिए मैं ने जयशंकर प्रसाद के द्वारा प्रस्तुत कहानियों में प्राप्त प्रेम के स्वरूप का अनुशीलन करने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध : छः अध्यायों में विभाजित है।

प्रथम अध्याय में प्रेम के स्वरूप के बारे में सूक्ष्मता के साथ विचार किया गया है। प्रेम की महत्ता तथा प्रेम के विविध रूपों के बारे में स्पष्टीकरण दिया गया है। प्रेम और काम के संबंध के बारे में भी इस अध्याय में चर्चा की गयी है। उसी प्रकार प्रेम के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है। इसके उपरांत प्रेम की भारतीय परंपरा को परखा गया है। प्रसादपूर्व तथा प्रसादोत्तर हिंदी साहित्य के हर काल में प्रेम के स्वरूप का स्पष्टीकरण यहाँ प्रस्तुत किया है। प्रेम किसी विशिष्ट देश की अमानत न होकर उसका आयाम अत्यंत विशाल है।

अत: पाश्चात्य परंपरा में भी प्रेम के स्वरूप को देखा गया है। इस अध्याय के अंत में प्रेम और मनोविज्ञान के ताल्लुकात पर भी एक नजर डाली गयी है। इन सबके पीछे मेरा यही उद्देश्य रहा है कि प्रेम-भावना के स्वरूप के बारे में कोई संदेह मन में न रह जाय।

द्वितीय अध्याय में हिंदी कहानी के इतिहास को प्रस्तुत किया है। हिंदी कहानी के काल-विभाजन के आधार पर यह इतिहास स्पष्ट हुआ है। प्रसाद का हिंदी कहानी विधा में क्या स्थान है ? इसका मूल्यमापन भी यहीं किया है। इसीके साथ-साथ प्रसाद के समकालिन कहानीकारों की विशेषताओं को भी परखा गया है। उसके बाद प्रसादोत्तर कहानीकारों का परिचय भी पाने की चेष्टा की है। अंत में आधुनिक कहानीकारों की कृतियों की विशेषताओं को भी परखा है। इसके पीछे मेरा यही मकसद रहा है कि कहानी के विकास की अखंड परंपरा हमारे सामने साकार हो उठे।

तृतीय अध्याय में हिंदी कहानी में प्रेम के स्वरूप को उजागर करने की कोशिश की है। इसके लिए प्रसाद पूर्व कहानी में प्रेम, प्रसाद-युगीन कहानी में प्रेम और प्रसादोत्तर कहानी में प्रेम इन उपविभागों के जरिए प्रेम के समग्र रूप को स्पष्ट करना चाहा है। अंत में आधुनिक कहानी में प्राप्त प्रेम के स्वरूप का भी विश्लेषण किया गया है। इसके कारण हिंदी कहानी विधा में प्रेम के विकसित और परिवर्तित स्वरूप का स्पष्ट परिचय मिलता है।

चतुर्थ अध्याय मेरे लघु शोध-प्रबंध का प्राण है। क्यों कि, इसमें प्रसाद जी की कहानियों में व्याप्त प्रेम के विविध रूपों की विस्तृत चर्चा की गयी है। प्रसाद जी की कहानियाँ पढ़ने के बाद उनका प्रेम के बारे में जो कुछ दृष्टिकोन महसूस किया उसे इस अध्याय में चित्रित किया है। अपनी संवेदनशीलता के

कारण प्रसाद जी ने मानवी जीवन में प्रेम के जो भिन्न भिन्न रूप देखें है वे मुख्य रूपेण इस प्रकार हैं -

१) प्रथम-दृष्टि प्रेम ।
२) दांपत्य-प्रेम ।
३) असफल-प्रेम ।
४) सफल-प्रेम ।
५) अलौकिक-प्रेम ।
६) त्याग-समर्पण पूर्ण प्रेम । आदि -

पाँचवा अध्याय प्रसाद जी का प्रेम विषयक दृष्टिकोण स्पष्ट करता है । इसमें प्रसाद जी की दृष्टि में प्रेम का स्वरूप तथा आपके प्रेम में दर्शन का स्थान, आपकी दृष्टि में प्रेम में शृंगार का स्थान, प्रसाद जी का प्रेम-मार्ग, प्रेम और नारी का ताल्लुक आदि बातों पर सूक्ष्म दृष्टिसे विचार किया गया है ।

छठा और अंतिम अध्याय-उपसंहार का है । प्रसाद जी की कहानियों के प्रेम-तत्व पर सोचने पर जो निष्कर्ष हाथ लगे उन्हें उपसंहार के इस छठे अध्याय में सार रूप से रखा है । एक सफल तथा प्रभावी प्रेम-कहानी लेखक की हैसियत से प्रसाद जी की जो विशेषताएँ दृष्टिगोचार होती है, उनका निर्देश कर आपके लेखन के विकासक्रम को भी अंकित करने का प्रयत्न यहीं मैं ने किया है ।

इस लघु शोध-प्रबंध के अंत में सहायक ग्रंथों की सूची जोड़ दी है, जो मुझे इस शोध-कार्य के सिलसिले में विशेष मददगार रही है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध डॉ. के.पी. शाह जी के आशीर्वाद और कृपापूर्ण, सदाम निर्देशन में लिखा गया है । यह बात मेरे लिए एक खास मायना रखती है । इसे मैं अपना गौरव समझती हूँ । सातत्यपूर्ण व्यक्तता के बावजूद आपने निरंतर प्रोत्साहन और प्रेरणा बना कर मेरी अत्यंत सहायता की है । मेरी अपनी पारिवारिक

कठिनाईयों के कारण ऐसी स्थितियाँ अनेक बार उत्पन्न हुयी कि, मेरे मन में इस शोध-प्रबंध की पूर्ति के बारे में संशय उत्पन्न हुआ, परंतु समय-समय पर आपने मेरा हौसला बुलंद रखा । इस कार्य के संबंध में आयी हर कठिनाई में आपने मेरा साथ निभाया है । आपकी इस सहृदयता को आभार के चंद लफ़्ज़ कहकर में सीमित करना तो नहीं चाहती परंतु यह बात निश्चित है कि, आपकी इस कृपा का एहसास मुझे हमेशा-हमेशा रहेगा । आपके इसी स्नेह, प्रेरणा और आशीर्वाद की मैं सदैव अभिलाषी रहूँगी ।

इस शोध-कार्य में पग-पग पर मेरा साथ देनेवाले मेरे पति श्री. स्नेहलकुमार ए. मणियार जी का जिक्र यहाँ पर करना अत्यंत अनिवार्य है । इस के साथ ही मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखती हूँ ।

आपकी कृपापार्थी ।

(प्रा.सौ.आशा एस्. मणियार)

कोल्हापुर

दिनांक : २४।५।१९८९